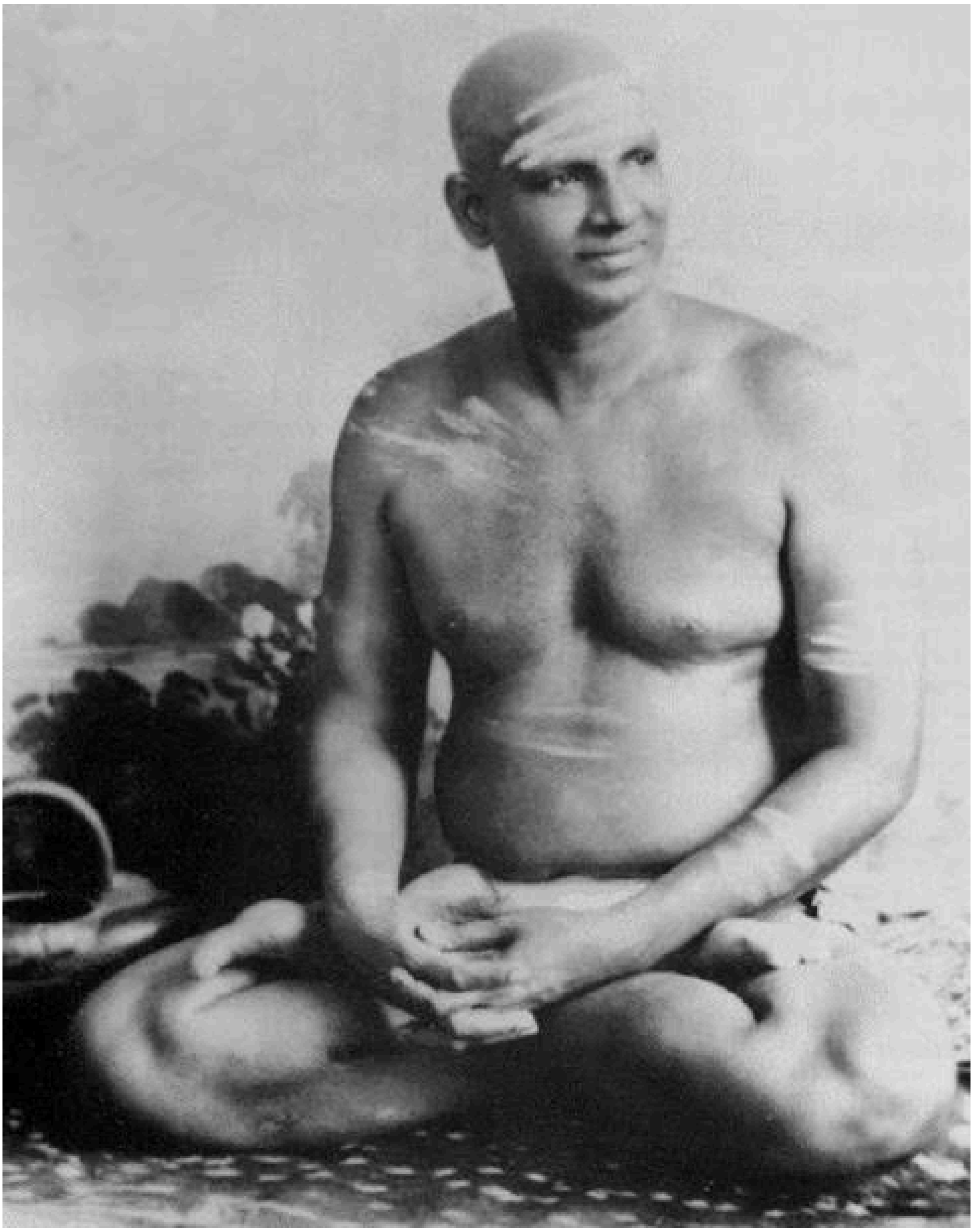
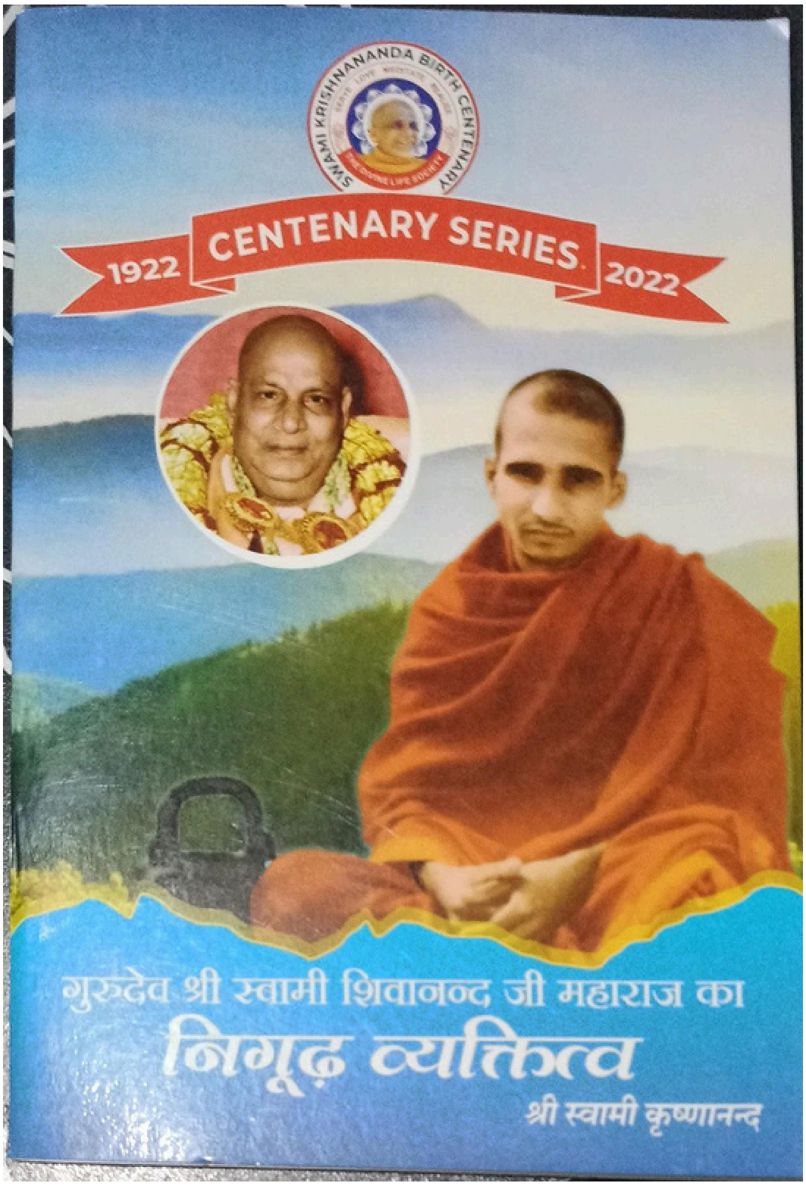



SWAMI KRISHNANANDA BIRTH CENTENARY
1922
CENTENARY SERIES
2022
गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का
निगूढ़ व्यक्तित्व
श्री स्वामी कृष्णानन्द

गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का शनगूढ़ व्यक्तित्व

(The InscrutableGurudevSriSwami Sivananda)

लेखक

श्री स्वामी कृष्णानन्द

अनुवाशदका

स्वामी गुरुवत्सलानन्द माता जी

प्रकिाक

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

पत्रालय : शिवानन्दनगर२४९१९२

शजला : शिहरीमढ़वाल उत्तराखण्ड (शहमालय), भारत

www.sivanandaonline.org, www.dlshq.org

प्रथम शहन्दी संस्करण : २०२१

(२,००० प्रशतयााँ)

Swami Krishnananda Birth Centenary Series-12

शनि:ुल्कि शवतरणाथथ

'द शिवाइन लाइफ सोसायिी, शिवानन्दनगर' के शलए
स्वामी पद्मनाभानन्द द्वारा प्रकाशित तथा उन्हीं के द्वारा
'योग-वेदान्त फारेस्ट एकिोमी प्रेस, पत्रालय : शिवानन्दनगर,
शजला : शिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड, शपन : २४९१९२' में मुशित।
For online orders and Catalogue visit: dlsbooks.org

प्रकाशकीय

२५ अप्रैल २०२२ परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज की जन्मिताब्दी का िुभ शदवस है। इस पावन अवसर पर, मुख्यालय आश्रम ने पूज्य श्री स्वामी जी महाराज के प्रबोधनकारी

एवं प्ेरेरणाप्रद प्रवचनों ◌को संकशलत कर पुक्तिकाओं ◌के रूप में शनि:ुल्कि शवतरणाथथ प्रकाशित करने का शनणथय शलया है।

पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज वर्थ १९४४ में सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के पशवत्र आश्रम में आये तथा नवम्बर २००१ में महासमाशध पयथन्त यहीं ◌रहे। श्री स्वामी जी महाराज भारतीय एवं पाश्चात्य दिथन की प्रत्ेयेक शवचारधारा के प्रकाण्ड शवद्वान् हैं। श्री गुरुदेव उनके सम्बन्ध में कहते हैं, "एक कृष्णानन्द में अनेक ि◌कराचायथ समाशहत हो गये हैं।"

पूज्य श्री स्वामी जी महाराज वर्ों तक रशववार राशत्रकालीन सत्संग में, श्री गुरुदेव के जन्म शदवस, श्री कृष्ण जयन्ती, श्री महाशिवराशत्र आशद शवैर् अवसरों ◌पर तथा साधना सप्ताह एवं योग-वेदान्त फॉरेस्ट अकादमी द्वारा संचाशलत योग-वेदान्त कोसथ में अपने गम्भीर और अन्ति:प्रज्ञापूणथ व्याख्यानों ◌से साधकों–भिों ◌को लाभाक्तित करते रहे। वे सदैव शबना शकसी पूवथ तैयारी के, स्वति:सुफुररत प्रवचन देते थे और उनका प्रत्ेयेक उद्बोधन नवीन, अशद्वतीय एवं शदव्य प्ेरेरणा से पररपूणथ होता था। इन प्रवचनों ◌को सुनते हुए श्रोतागण पूज्य श्री स्वामी जी महाराज से शनि:सृत अपररशमत ऊजाथ से अत्यशधक ऊजथक्तस्वत हो जाते थे।

अत्यन्त हर्थपूवथक, हम पूज्य श्री स्वामी जी महाराज की जन्मि–ताब्दी के ि◌ुभ अवसर पर उनकी कुछ पुक्तिकाओं ◌को उनके पावन चरणों ◌में श्रद्ांजशलस्वरूप अशपथत कर रहे हैं। प्र्िुत पुक्तिका 'गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का शनगूढ़ व्यक्तित्व' पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज द्वारा २२ जनवरी १९८४ को राशत्रकालीन सत्संग में शदये गये व्याख्यान का अनुवाद है।

सवथिक्तिमान् प्रभु, सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज एवं परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज के शदव्य अनुग्रह सब पर हों।◌

-द डिवाइन लाइफ सोसायटी

गुरुदेव श्री स्वामी डशवानन्द जी महाराज का डनगूढ़ व्यक्तित्व

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनि्ु। सह वीयं करवावहै।
तेजक्तस्व नावधीतमि्ु। मा शवशद्वर्ावहै। ॐ ि◌ाक्तन्ति: ि◌ाक्तन्ति: ि◌ाक्तन्ति: ।

आध्याक्तिक जीवन मात्र एक ि◌ैशिक प्रशिया नहीं ◌अशपतु आि-शनमाथण की प्रशिया है, अत: प्राचीन काल के गुरुजनों ◌द्वारा अपने शिष्यवृन्द को पूणथतया नवीन शवशधयों ◌एवं रूपों ◌में अनुि्ाशसत करना आवश्यक था। आधुशनक मनुष्य अपनी आिा को खो चुका है, इसशलए उसका जीवन के प्रशत पूणथति: भौशतकवादी दृशिकोण बन चुका है, उसके शलए इन शवशधयों ◌को समझ पाना ही दुष्कर है, इनकी प्रि्ंसा करना तो दूर की बात है। वह एक प्राणशवहीन, जीवनिक्तिशवहीन अक्तथथपंजर तथा एक मि्ीन की तरह जीवन जीता है। अति: उसके शलए औपशनर्शदक काल के शिष्यों ◌के उस अनुि्ासन को समझ पाना पूणथतया असम्भव है, जब गुरुजन उनके व्यक्तित्व के अन्तरतम भाग को प्रशिशित करते थे। आि-शनमाथण की प्रशिया का यही अथथ है। इसमें हमारे अक्तित्व के मूल को, अन्तरतम भाग को पूणथ पररिु्द् शकया जाता है।

ुक्तिद्करण अथवा पशवत्रीकरण की यह प्रशिया ही साधना है। परनुतु आजकल हम मात्र
तथ्ों–ंसूचनाओं ंको एकशत्रत करने वाले वैज्ञाशनक, कुतूहलवित् जानने वाले शनरीिणकताथ,
प्रयोगकताथ बन चुके हैं। जीवन के प्रशत इस दुभाथग्यपूणथ दृशिकोण के कारण आज हम ऐसी क्तथथशत में
पहुाँच गये हैं जहााँ हम उस सूखे पत्ेते के समान बन गये हैं जो बाहरी संसाधनों ंद्वारा ही पोर्ण प्राप्त करता है। अठारहवीं
ंतिाब्दी में एक दिथन के रूप में प्रारम्भ हुआ भौशतकवाद आधुशनक जीवन का सवथस्व बन चुका है। आज भौशतकवाद
मात्र एक शसद्ान्त अथवा दिथन नहीं ंहै, यह हम
स्वयं हैं। हम स्वयं पदाथथ बन चुके हैं, शमट्टी की गेंदें तथा प्राणशवहीन मिीनें बन चुके हैं।

अतिः जीसस िाइस्ट, मोहम्मद पैगम्बर, भगवान् श्री कृष्ण, श्री रामकृष्ण परमहंस जी
अथवा श्री स्वामी शिवानन्द जी के उपदेिों ंको समझ पाना हमारे शलए कशठन हो गया है। हम
केवल सभाओं–ंसमे्मेलनों ंमें शवचारों ंके आदान-प्रदान से तथा सामाशजक िर पर व्यावहाररक कौिल
से प्राप्त उन तथ्ों–ंसूचनाओं ंको सदुपदेि मान लेते हैं जो व्यक्ति की आिा से उद्भूत नहीं ंहोते
हैं।

यशद हम महान् शतब्बती गुरु मारपा द्वारा अपने एक महान् शिष्य शमलारेपा को प्रशिशित
करने हेतु अपनायी गयी शवशधयों ंएवं तकनीकों ंके शवर्य में जानेंगे तो हमारे शवस्मय की कोई सीमा
नहीं ंरहेगी। हम उन शवशधयों ंको समझ नहीं ंसकते हैं और यह हो सकता है शक हम स्वयं को
श्े्रष्ठ एवं महत्त्वपूणथ मानकर, इन महान् गुरुजनों ंको पुरानी िैशिक पद्शतयााँ प्रयोग करने वाले ऐसे
असभ्य एवं अशिि जन घोशर्त कर दें जो आधुशनक िैशिक मनोशवज्ञान एवं हमारी सभ्य िैशिक
पद्शतयों ंयथा मॉन्े्टेसरी व्यवथथा से पररशचत नहीं ंहैं। परनुतु इस प्रकार स्वयं को श्े्रष्ठ मानने से हम
आध्याक्तिक अनुिासन की महत्ता को नहीं ंजान पायेंगे।

यद्यशप ईसाई धमथ पाप के शसद्ान्त से सुपररशचत है, शजसके अनुसार एिम (आदम) एवं
इव (हव्वा) के वंिज होने के कारण मनुष्य जन्मतिः बुरे स्वभाव से युि होता है; परनुतु यह
जानना भी आवश्यक है शक मनुष्य का यह स्वभाव आध्याक्तिक अनुिासन का कट्टर शवरोधी होता
है। हम जैसे मनुष्यों ंके शलए यह समझना कशठन है शक चैतन्य आिा शकस सीमा तक जड़ पदाथथ
के साथ सम्बक्तन्धत हो चुकी है, तादात्म्य कर चुकी है। भौशतक आवरणों ंके साथ इतना अशधक
सम्बक्तन्धत होना, उनके साथ इस प्रकार संयुि हो जाना वुितिः अत्यन्त आश्चयथजनक है। यह
सम्बन्ध इतना गहरा हो चुका है शक हम कह सकते हैं, जैसा शक मैंने पूवथतिः कहा शक हम पदाथथ
द्वारा धारण की गयी आकृशतयों ंके समान बन गये हैं। हम मन एवं आिा होने की अपेिा मात्र
िरीर रह गये हैं। हम िरीर की आवश्यकताओं–ंइच्छाओं ंको पूरा करने के शलए मन का एक
सहायक के रूप में उपयोग कर रहे हैं। हममें से शकतने मनुष्यों ंके पास इतना समय है शक हम
यह शवश्वास कर सकें शक हमारे भीतर आिा है, गहन तकथ एवं शवचार करना तो दूर की बात है।

परनुतु सन्त-महापुरुर् शकन्डरगाटथन अथाथत् बालशवहार के अध्यापक नहीं ंहैं। वे
राजनीशतिास्त्र, गशणत तथा अन्य शवज्ञानों–ंशवर्यों ंके शििक नहीं ंहैं। एक सन्त अथवा महापुरुर्
पररपूणथता-प्राप्त आिा हैं, अतिः इस पररपूणथता को प्राप्त करने हेतु शजस अनुिासन का उन्ोंने
स्वयं पालन शकया, वे अपने एक ग्रहणिील शिष्य को उसी अनुिासन की शििा देने हेतु समुतु्सुक
होंगें। आजकल के शवद्याशथथयों ंको उपलब्ध िैशिक सामग्री एवं पुिकों ंकी अपेिा सन्त-महापुरुर्ों ं
के आदिथ जीवन उच्च शििा प्रदान करने के महानतम स्रोत हैं।

एक आध्याक्तिक साधक वह जीवािा है जो पररपूणथता प्राक्तप्त के पथ पर है। वह सू्कूल,
कॉलेज अथवा यूशनवशसथटी में अध्ययन करने वाला शवद्याथी नहीं ंहै। वह मानव समाज में भौशतक,
आशथथक एवं सामाशजक रूप से शनवाथह करने हेतु शकसी उपाशध अथवा योग्यता को अशजथत नहीं ं
करना चाहता है। आध्याक्तिक शििा का उदे्देश्य व्यक्ति को सामाशजक व्यवथथाओं ंएवं राजनीशतक
कौिलों ंके इस जगत् में रहने हेतु योग्य बनाना नहीं ंहै। इसका उदे्देश्य सवथा शभन्न है।

आज हमारा शचन्तन इस सीमा तक भौशतकवादी एवं अथथवादी हो चुका है शक जब हमसे कहा जाता है शक आध्यात्तिक शििा भगवदोन्मुखी प्रशिया है, तो हम प्राचीन शवशधयों ंके प्रशत शतरस्कार के भाव के साथ मन ही मन हाँसते हैं। गम्भीर एवं सचे्चे साधकों ंने श्री रामकृष्ण परमहंसदेव से क्या शििा प्राप्त की? वे जब उनके सम्पकथ में आये, तो उनके व्यक्तित्व में पूणथ पररवतथन घशित हुआ; वे वैसे नहीं ंरहे, जैसे वे पहले थे। महान् सद्गुरुओं ंका आश्रय प्राप्त होने से ऐसे पररवतथन की आिा एवं अपेिा ही की जाती है।

शवश्व शवशभन्न ऐशतहाशसक अवथथाओं ंसे गुजर चुका है तथा हमारे शलए यह जानना कशठन है शक इस समय यह शकस अवथथा से गुजर रहा है क्योंशक आज हम उस सौभाग्यपूणथ पररक्तथथशत में नहीं ंहैं जहााँ हमारा सम्पकथ ऐसे महान् सद्गुरुओं ंसे हो सके। आज शवश्व में ऐसे महान् सत्पुरुर्ों ंको रखने की सामथ्थ नहीं ंहै, अतः इसने स्वयं को उनसे पूणथतः मुि कर शदया है। यह कहना असत्य नहीं ंहोगा शक आज मानवता 'गुशलवर ि्रवल्स' पुिक में वशणथत शलशलपुि ि्त्र के उन शनवाशसयों ंका बृहद् समूह मात्र बन चुकी है शजनका आकार चींिी के समान है परन्तु अहंकार पवथत के समान है तथा जो एक सीढ़ी के माध्यम से गुशलवर के पैर पर चढ़ना चाहते हैं।

मानवीय समझ के बौनेपन ने, इसकी िुि्ता ने जीवन के सवोच्च मूल्ों ंको शवस्मृत करके आि-सन्तुशि का ऐसा रूप धारण शकया है शक आधुशनक शििा पद्शत में आध्यात्तिक शििा की प्राचीन व्यवथथा की न केवल पूणथतया अवहेलना की गयी है अशपतु इन आध्यात्तिक मूल्ों ंको सवथा भुला शदया गया है।

श्री रामकृष्ण परमहंसदेव के प्रथम शिष्य, जीसस ि्राइस्ट के बारह धमथदूत तथा अवतार-पुरुर्ों ंएवं धमथगुरुओं ंके प्रारक्तम्भक सहायक एवं सहयोगीजन ही आि की उस भव्य मशहमा के सािी हो सकते हैं जो इन शवशभन्न सन्त-महापुरुर्ों ंमें शवशवध रूपों ंमें अशभव्यि होती है । यह आवश्यक नहीं ंहै शक दो सन्तों ंका व्यवहार एक जैसा हो। हमारे समि दशिण भारत के सुप्रख्यात आध्यात्तिक महापुरुर्ों ंअथाथत् नयनार एवं आलवार सन्तों ंके उदाहरण हैं। यशद हम इन वैष्णव सन्तों ं'आलवार' तथा ि्व सन्तों ं'नयनार' के जीवन के शवर्य में पढ़ेंगे, तो अकल्पनीय आनन्द एवं शवस्मय से हमारा रोम-रोम रोमांशचत हो जायेगा। वे केवल भगवान् में श्रद्ा रखने वाले आक्तिक जन नहीं ंथे, न ही वे केवल शकसी धाशमथक व्यक्ति के समान भगवद्-आराधना करने वाले भगवद्-भि थे। यह कहना अत्यन्त कशठन है शक उनका भगवान् के साथ कैसा सम्बन्ध था। भगवान् के प्रशत इन नयनार एवं आलवार सन्तों ंके भाव की व्याख्या हेतु ि्ब्द पयाथप्त नहीं ंहैं। हम यह कहकर स्वयं को सन्तुि कर सकते हैं शक भगवान् इन सन्तों ंके रोम-रोम में समाये थे। उनके कायथ एवं स्वभाव के प्रत्येक अंि में मानो भगवान् ही नृत्य कर रहे हों।ं उनकी ि्क्तियााँ भगवान् की ि्क्तियों ंके समान थीं,ं तथा वे भगवान् से वैसा ही व्यवहार करते थे जैसा वे शकसी अन्य व्यक्ति के साथ करते थे। वे भगवान् को उसी प्रकार पुकार सकते थे शजस प्रकार हम एक सेवक को पुकारेंगे। उनके शलए इसमें कोई कशठनाई नहीं ंथी। उनके व्यक्तित्व के भगवदीय सत्ता से पूणथरूपेण ओत-प्रोत हो जाने को ही सन्तत्व का परमोत्कर्थ कहा जा सकता है।

हम भगवान् श्री कृष्ण, भगवान् श्री राम, जीसस ि्राइस्ट, श्री गौरांग महाप्रभु, श्री रामकृष्ण परमहंसदेव आशद इन अवतार-पुरुर्ों ंएवं सन्तजनों ंकी पूजा-आराधना करते हैं परन्तु हम अपने हृदय के अन्तरतम भाग से इनके व्यक्तित्व में समाशवि होकर, इनसे एकाकार होकर यह नहीं ंजान सकते हैं शक वे वािुतः क्या थे, क्या सोचते थे, क्या अनुभव करते थे तथा शकस प्रकार जीवन जीते थे।

उस साधक को ही शिष्य कहा जा सकता है जो न केवल अपने गुरु की आज्ञाओं ंका पालन करता है अशपतु जो अपने गुरु के शदव्य स्वभाव का सहभागी भी होता है। यह महत्त्वपूणथ है। आज्ञाकाररता से अशभप्राय जो गुरु कहें, केवल उसके प्रशत 'हााँ जी' अथाथत् स्वीकृशत भाव नहीं ं

है, अशपतु यह शिष्य की आिा का गुरु की मशहमामयी आिा के प्रशत पूणथ समपथण है। यह शिष्य की शजह्वा द्वारा नहीं ंअशपतु उसकी आिा द्वारा की गयी 'हााँ' अथाथत् स्वीकृशत है, समपथण है। शजस प्रकार सन्त भगवान् से एकत्व अनुभव करते हैं, उसी प्रकार से शिष्य गुरु से एकाकार होते हैं। यह एक शवशध है शजसके माध्यम से हम समझ सकते हैं शक एक शिष्य को अपने गुरु के साथ शकस प्रकार का सम्बन्ध थथाशपत करना चाशहए।

सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज ने शवश्व के समि अपने सहज-सरल तरीके से शदव्य जीवन के उस आदिथ को प्रस्तुत शकया शजसके वे स्वयं साकार शवग्रह थे। अपने शवशिि स्वरूप में, वे प्राचीन औपशनर्शदक गुरु महशर्थ याज्ञवल्क्य अथवा शतब्बती गुरु मारपा की प्रशतकृशत थे अथाथत् उनके जैसे ही थे। यह कहने का कारण है क्योंशंक उनका स्वभाव भी अबोधगम्य था। उनके जीवन को हम ताशकथक शवकास की दृशि से नहीं ंदेख सकते हैं। हम उनके शकसी कायथ-व्यवहार से शकसी सुशनशश्चत शनणथय एवं शनष्कर्थ पर नहीं ंपहुाँच सकते हैं। हमारे शलए उनका व्यवहार अप्रत्याशित एवं कभी-कभी अबोधगम्य होता था; हम उनके व्यवहार का पूवाथनुमान नहीं ंलगा सकते थे तथा न ही उसे समझ पाते थे। गुरुदेव इस शसद्ान्त की एक पररपूणथ एवं जीवन्त प्रशतमा थे शक शजतना अशधक हम देते हैं, स्वयं को अशपथत करते हैं; उतना अशधक भगवान् हमारे भीतर प्रशवि होते हैं। यहााँ 'देने' का आध्याक्तिक रूप में अथथ समझना चाशहए। सामान्य जन गुरुदेव को उनकी असीम दानिीलता के कारण शवनोदपूवथक 'शिवानन्द' नहीं ंअशपतु 'शगवानन्द' (Givananda) कहते थे।

मुझे आज भी वह घिना याद है शजससे मैं अत्यशधक अचक्तम्भत हो गया था, परन्तु उनकी महानता की प्रतीकस्वरूप उस घिना का मैं प्राय: प्रेमपूवथक स्मरण करता हाँ। उन शदनों ंआश्रम की आशथथक क्तथथशत अच्छी नहीं ंथी, अतः वे सबके शलए अत्यन्त कशठनाई के शदन थे। आश्रम के शकसी अन्तेवासी ने कभी कोई फल न प्राप्त शकया और न ही देखा। केवल श्री गुरुदेव के शलए अत्यन्त अल्प मात्रा में फल खरीदे जाते थे। गुरुदेव वयोवृद् थे, अतः सब अन्तेवाशसयों ंकी यही इच्छा थी शक उनकी उशचत देखभाल हो। प्रशतशदन थोड़े से फल खरीदे जाते थे तथा मााँ गंगा के ति पर क्तथथत उनके कुिीर (शजसे आज गुरुदेव कुिीर कहा जाता है) की रसोई में रखे जाते थे। एक शदन कुछ व्यक्ति श्री गुरुदेव के दिथनाथथ आये, उन्ोंनें गुरुदेव को प्रणाम शकया और जाने लगे। गुरुदेव उन्ें प्रसाद-स्वरूप एक- दो फल देना चाहते थे। उन्ोंनें अपने रसोइये से पूछा, "आपके पास कुछ फल हैं?"

रसोइये ने कहा, "नहीं,ं स्वामी जी। फल नहीं ंहैं।" क्योंशंक वह फल कहााँ से लाता; रसोई में जो दो या तीन सेब तथा कुछ सन्तरे थे, वे तो गुरुदेव के शलए रखे गये थे।

श्री गुरुदेव ने कहा, "जाइए और देक्तखए। कुछ फल हो सकते हैं।"

उसने वही दोहराया, "नहीं,ं स्वामी जी। फल नहीं ंहैं।"

उन आगन्तुकों ंने श्री गुरुदेव को पुनः प्रणाम शकया और चले गये। इसके पश्चात् गुरुदेव ने रसोइये से प्रश्न शकया, "क्या फल नहीं ंहैं?" उसने पुनः वही उत्तर शदया, "नहीं,ं स्वामी जी।"

गुरुदेव सीधे रसोई में गये। यह कोई बड़ा रसोईगृह नहीं ंथा, कुिीर के एक कोने का ही रसोई के रूप में उपयोग शकया जाता था। उन्ोंनें वहााँ फलों ंकी एक छोिी िोकरी देखी शजसमें कुछ सेब एवं सन्तरे थे। अतः उन्ोंनें रसोइये से कहा, "यहााँ तो फल रखे हैं। तब आपने ऐसा क्यों ंकहा शक फल नहीं ंहैं। मैं उन आगन्तुकों ंको कुछ फल देना चाहता था।"

उसने उत्तर शदया, "ये फल केवल स्वामी जी के शलए हैं।"

"अच्छा, ये मेरे शलए हैं," यह कहते हुए गुरुदेव ने िोकरी उठायी और सारे फल बन्दरों ंको दे शदये। अब उनके इस व्यवहार पर आप क्या कहेंगे! उन्ोंनें फलों ंकी पूरी िोकरी खाली कर दी। अब आपको यह समझ नहीं ंआयेगा शक आप जोर-जोर से रोयें, पछतायें अथवा उन्
समझने की कोशिि करें।

मैंने हमेिा यह अनुभव शकया है शक कोई सद्ग्रन्थ, यहााँ तक शक उपशनर्द् भी सन्तों ंके जीवन के समान प्ेरेरणाप्रद नहीं ंहो सकते हैं। हम इस प्रकार की अनेक रोमांचक, हृदयस्पिी एवं प्ेरेरणादायी घिनाओं ंको 'महाभिशवजय' पुिक में पढ़ सकते हैं शजसमें महारािर एवं कनाथिक के महान् सन्तों ंकी जीवनगाथाएाँ वशणथत हैं। ये सन्त बाह्य दृशि से अशकंचन एवं सामान्य व्यक्ति ही प्रतीत होते थे। सन्त एकनाथ, सन्त नामदेव, पुरन्दर दास एवं सन्त तुकाराम समृद् जमींदारों ंकी सन्तान नहीं ंथे। शनधथनता ही उनकी एकमात्र सम्पदा थी। उनके पास शनधथनता के अशतररि अन्य कुछ नहीं ंथा। परन्तुतु वे भगवान् के अत्यन्त समीप थे। उनमें से एक सन्त तो भगवान् के साथ सेवक की भााँशत व्यवहार कर रहे थे। भगवान् कृष्ण स्वयं एक छोिे लड़के के रूप में सन्त एकनाथ की सेवा कर रहे थे। वे उनके वस्त्र धोते थे, घर की सफाई करते थे तथा उनके जूठे बतथन भी साफ करते थे। उन सन्त की जीवन-गाथा में ऐसा उले्लेख आता है शक एक बार एक अन्य सन्त भगवान् के दिथन हेतु पण्ढरपुर गये तो वहााँ भगवान् को अनुपक्तथथत पाया। उन्ें स्वप्न में एक शदव्य वाणी द्वारा कहा गया शक भगवान् सन्त एकनाथ के घर में हैं। उन्ें अत्यशधक आश्चयथ हुआ शक भगवान् शकस प्रकार पण्ढरपुर छोड़कर एक शनधथन व्यक्ति के घर में रह रहे हैं। वे भगवान् के दिथनाथथ सन्त एकनाथ के घर की ओर दौड़े। ऐसा कहा जाता है शक वह सेवक वहााँ से अदृश्य हो गया। शकसी को पता नहीं ंचला शक वह कहााँ चला गया। क्योंशंक वह नहीं ंचाहता था शक कोई उसे खोज पाये।

आप सब यह नहीं ंसमझ पायेंगे शक महान् सद्गुरुओं ंके प्रारक्तम्भक शिष्यजनों ंने शजन दुिःखप्रद कशठनाइयों ंको सहन शकया, वे शकस प्रकार उनके शलए सुख एवं िाक्तन्तप्रदायक भी थीं।ं हममें से कुछ व्यक्ति आधुशनक युग के महानतम सन्त श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के शवर्य में कुछ बातें कह सकते हैं जो हमारे प्रत्यि अनुभव पर आधाररत हैं। उनके जैसा मशहमामय व्यक्तित्व देख पाना दुलथभ है; जीसस िाइस्ट के समान अपना सवथस्व दूसरों ंको देने वाली शविालहृदयता एवं उदारता केवल ऐसे महान् गुरुजनों ंमें ही देखी जा सकती है।

श्री गुरुदेव के मन में अकस्मात् ही अपने शिष्यों ंको कुछ उपदेि देने का शवचार उठता, और वे तुरन्त उसी थथान पर उन्ें उपदेि प्रदान कर देते। इसके शलए कोई पूवथ सूचना नहीं ंदी जाती थी।

उन शदनों ंआश्रम में कलकत्ता का एक युवक रह रहा था। वह आश्रम शिसे्पेन्सरी में कम्पाउन्डर के रूप में कायथ कर रहा था। एक शदन श्री गुरुदेव अचानक ही उसके पास पहुाँचे। यह सुबह ९ बजे अथवा उससे कुछ पहले का समय था। श्री गुरुदेव शिसे्पेन्सरी गये तथा उसे बाहर से ताला लगा कर अपने कुिीर में चले गये। कोई नहीं ंजानता था शक यह क्यों ंहुआ।

उस युवक ने उस समय तक न तो स्नान शकया था और न ही कुछ खाया था, परन्तुतु शकसी ने इस बात की ओर ध्यान नहीं ंशदया। सूयाथि का समय हो रहा था, परन्तुतु ऐसी कोई आिा अथवा संकेत नहीं ंशदख रहा था शक गुरुदेव शिसे्पेन्सरी के दरवाजे को खोलेंगे। उस युवक ने सुबह से कुछ नहीं ंखाया था; वह यह समझ नहीं ंपा रहा था शक उसके साथ क्या हो रहा था। मैं जब वहााँ से गुजरा, तो वह क्तखड़की से बाहर झााँक रहा था। मुझे उसने पूरी बात बतायी। परन्तुतु कोई क्या कह सकता था? हम भी कुछ नहीं ंजानते थे। हम सब अत्यशधक आश्चयथचशकत थे। उसकी दिा अत्यन्त दयनीय थी। परन्तुतु कोई नहीं ंजानता था शक बात क्या है। इस प्रकार अत्यशधक दुिःख एवं कि के साथ उसने वह पूरा शदन एवं रात गुजारे। वह रो रहा था शक यह क्या हो रहा है।

अगली सुबह श्री गुरुदेव अपने हाथ में एक सन्तरा शलये हुए आये और उन्ोंनें शिसे्पेन्सरी का ताला खोला। उन्ोंनें उस युवक से पूछा, "आप समू्पूणथ शदन एवं राशत्र क्या सोचते रहे?" आप
कल्पना कर सकते हैं शक वह युवक क्या सोच रहा होगा। श्री गुरुदेव ने पुनिः पूछा, "क्या आप
समू्पूणथ शदन एवं राशत्र भगवद्-शचन्तन कर रहे थे ?"

युवक ने उत्तर शदया, "इसके अशतररि सब शचन्तन हो रहा था।"
"कोई बात नहीं, ं आप एक भले युवक हैं। आपने महान् तपस्या की है और यह आपके शलए उपहार है।" ऐसा कहते हुए श्री गुरुदेव ने उसे सन्तरा शदया एवं चले गये।

हममें से कोई भी गुरुदेव द्वारा ऐसे कठोर व्यवहार के अनुभव से अपररशचत नहीं ंथा अथाथत् हमें भी ऐसे व्यक्तिगत अनुभव हुए थे। आश्रम के श्े्रेष्ठतम कायथकताथ भी इस प्रकार का अनुभव प्राप्त कर चुके थे। मुझे याद आता है शक एक शदन उन्ोंनें मुझे ब्रह्मपुरी के समीप जंगल में एक कुशिया में जाकर एकान्तवास करने हेतु कहा। एक भि श्री गुरुदेव को यह कुशिया अशपथत करना चाहता था। उन शदनों ंमैं शकसी कायथ में अत्यशधक व्यि था। श्री गुरुदेव ने कहा, "जाइए, उस कुशिया में शनवास कररए और ध्यान कररए।" जैसा शक मैंने बताया शक यह शबलु्कुल अचानक हुआ। उनके उपदेि-आदेि शबना शकसी पूवथ सूचना के उसी थथान पर दे शदये जाते थे। वे ऐसा नहीं ं कहते थे, “मैं चाहता हाँ शक आप कल वहााँ जायें।" वे हमसे कहते थे, "अभी इसी िण जाइए।"

मैंने उनसे कहा, "कुछ आवश्यक कायथ है।" जैसे ही मैंने कहा शक कुछ कायथ है, श्री गुरुदेव थोड़े िुद् हो गये और कहने लगे, "कायथ ? शकसका कायथ ? शकसके शलए कायथ ? यह जगत् ही अक्तित्व में नहीं ंहै।" ये उनके िब्द थे। उन्ोंनें पुनिः कहा, "आपके समि जगत् ही नहीं ंहै, तो कायथ कहााँ है?" ऐसा कहकर वे चले गये। उन्ोंनें इस शवर्य पर मुझसे पुनिः बात नहीं ंकी। परनु्तु शकसी कारणवित्, वह एकान्तवास नहीं ंहो पाया।

श्री गुरुदेव 'मध्यम मागथ' के प्रबल समथथक थे। वे शदन भर शियािील रहने वाले व्यक्ति की आलोचना करते थे तथा उस व्यक्ति की भी भत्सथना करते थे जो पूरे शदन खाली बैठा रहता था अथाथत् कुछ कायथ नहीं ंकरता था। कोई भी उनकी दृशि से बचता नहीं ंथा। आश्रम में कुछ ऐसे व्यक्ति थे जो शदन भर माला जपते अथवा श्रीमद्भागवत महापुराण एवं रामायण का पाठ करते थे परनु्तु शकसी कायथ में भाग नहीं ंलेते थे। श्री गुरुदेव उनकी आलोचना करते हुए कहते थे, "इस प्रकार की भक्ति आपको कहीं ंनहीं ंले जायेगी। कशठन पररश्रम कररए। कमथिील बशनए।" वे इसे भक्ति की 'वृन्दावन शवशध' कहते थे। वे कहा करते थे, "यह वृन्दावन शवशध पररणाम नहीं ंदेगी। यह पयाथप्त नहीं ंहोगी।" वे उनके माला जपने की नकल करते हुए कहते थे शक इस प्रकार कपड़े के नीचे माला को छुपाकर हाथ से मनके को शफराना पाखण्ड का प्रदिथन ही है। परनु्तु यशद कोई व्यक्ति अत्यशधक पररश्रमील होता, तो उसे वे कहते थे, "आप कायथ के प्रशत आसि हैं। आसक्ति बुरी है। कायथ के प्रशत आसक्ति भी बहुत बुरी चीज है। थोड़ा जप कररए, स्वाध्याय कररए। थोड़ा शवश्राम कररए।" परनु्तु यशद कोई साधक जप करता एवं कायथ नहीं ंकरता तो वे उसे कहते, "आप आलसी हैं। आपको कमथयोग का अभ्यास करना चाशहए। कशठन पररश्रम कररए।"

समि सन्तों ंने जगत् में भगवान् की शवद्यमानता की अनुभूशत के साथ ही अपना कायथ-व्यवहार शकया। उन्ोंनें अलौशकक परम सत्ता के अपने अनुभव को इस जगत् के साथ सम्बद् शकया शजसमें उनका मानवीय व्यक्तित्व शियािील है।

मैंने इससे पहले आपको गुरुदेव की महान् जीवन-गाथा के प्रारक्तम्भक भाग के शवर्य में बताया था; वह आपको आधुशनक समय की शवचारधारा के अनुसार शकसी पौराशणक कथा अथवा अरेशबयन नाइ्टि की कहानी के समान ही लगेगी जो शक वतथमान पररक्तथथशतयों ंसे सवथा शभन्न होती

हैं। वे प्रारक्तम्भक शदन केवल भोजन-वस्त्र एवं अन्य सुख- सुशवधाओं ंकी दृशि से नहीं, ं अशपतु भावनिाक एवं बौक्तद्क सनुतुशि की दृशि से भी अत्यशधक कशठन थे।

उन शदनों ंगुरुदेव शकसी साधक को पुिकें पढ़ने की अनुमशत नहीं ंदेते थे। कोई कुछ भी नहीं ंपढ़ता था। सभी केवल सेवा करते थे तथा वही कायथ करते थे जो गुरुदेव ने उनसे करने को कहा था। एक शदन, एक स्वामी जी चोरी-शछपे कैलास आश्रम गये परनुतु गुरुदेव को पता चल गया शक वे कैलास आश्रम गये थे।

गुरुदेव ने उनसे पूछा, "आप कहााँ गये थे ?"

उन स्वामी जी ने उत्तर शदया, "मैं कैलास आश्रम गया था।"

गुरुदेव ने पूछा, "शकसशलए?"
उन्ोंनें उत्तर शदया, "मैं 'शववेकचूड़ामशण' पढ़ने के शलए वहााँ गया था।"
"अब आपके शसर पर सींगं उग जायेंगे (अथाथत् अहंकार बढ़ जायेगा)। आपने 'शववेकचूड़ामशण' का अध्ययन प्रारम्भ कर शदया। आप विाव में बहुत शवद्वान् हैं।" ऐसा कहकर गुरुदेव वहााँ से चले गये।

गुरुदेव िास्त्राध्ययन की अनुमशत नहीं ंदेते थे; इसका कारण यह कदाशप नहीं ंथा शक वे बौक्तद्क िुद्ता के शवरुद् थे अशपतु वे तो अपने शिष्यों ंकी िास्त्राध्ययन से उत्पन्न अहंकार से रि करना चाहते थे तथा वे उनके इस शवद्वताजन्य अशभमान को शकसी न शकसी शवशध द्वारा तुरन्त नि भी कर देते थे।

गुरुदेव कभी प्रवचन अथवा व्याख्यान नहीं ंदेते थे, अतिः प्रायिः लोग शिकायत करते थे शक वे उन् कुछ उपदिे अथवा शनदिे नहीं ंदेते हैं। "स्वामी जी, हम आपसे कुछ शनदिे-उपदिे प्राप्त करना चाहते हैं", यह सुनकर गुरुदेव नाराज हो जाते थे।

वे कहते थे, "आप मुझसे उपदिे चाहते हैं? देक्तखए, मैं क्या करता हाँ। यही मेरा उपदिे है।" उनकी दृशि में उनका जीवन ही उनका उपदिे था। वे बैठकर श्रोताओं ंको व्याख्यान नहीं ंदेते थे। उनकी एक शनयशमत एवं व्यवक्तथथत शदनचयाथ थी-वे प्रशतशदन सायंकालीन सत्संग में सद्ग्रन्थों ंका श्रवण करते थे। ये सत्संग गशमथयों ंमें उनके कुिीर के बरामदे में तथा सशदथयों ंमें भजन हॉल में आयोशजत शकये जाते थे तथा ये सूयाथि से प्रारम्भ होकर प्रायिः राशत्र ग्यारह बजे और कभी-कभी इसके बाद समाप्त होते थे। प्रत्येक सायंकाल गुरुदेव पहाड़ी की घुमावदार पगिण्डी पर चलकर भजन हॉल आते थे क्योंशंक उस समय सीशढ़यााँ अथवा पक्का मागथ नहीं ंबना था।

मुझे उन शदनों ंसत्संग एवं साधना-सप्ताह आयोशजत करने का थोड़ा अनुभव प्राप्त हुआ था परनुतु ये आजकल आयोशजत साधना-सप्ताह से शबलुकुल शभन्न होते थे। जबसे गुरुदेव को यह प्रतीत हुआ शक मैं इस प्रकार का कायथ कर सकता हाँ, उस समय से कई वर्ों तक मैं सत्संग- प्रभारी रहा अथाथत् सत्संग आयोशजत करना मेरा उत्तरदाशयत्व रहा। मैंने एक वर्थ तक भजन हॉल में अखण्ड कीतथन में भी सेवाएाँ दीं। ं उन शदनों ंका सत्संग भी अलग प्रकार का था। सत्संग के शलए दरी शबछाना एवं आसन रखना, शवशभन्न शदनों ंके अनुसार शवशभन्न देवी-देवताओं ंकी प्रशतमाओं ंको रखना, दीपक प्रज्वशलत करना, उस शदन पढ़ी जाने वाली पुिक को रखना तथा सत्संग को प्रारम्भ करना मेरा कतथव्य था। प्रारक्तम्भक प्राथथना एवं िोत्र पाठ तथा शकसी सद्ग्रन्थ यथा योगवाशसष्ठ अथवा श्रीमद्भागवत महापुराण के कुछ अंिे के वाचन के बाद, सबके द्वारा भगवन्नाम के गायन की नयी व्यवथथा को उन शदनों ंअपनाया गया था। अनेक व्यक्ति इसके भय से सत्संग में नहीं ंआते थे

तथा कुछ अन्य कहते थे शक उन्‍ सदी लगी है अथवा उनका गला खराब है इसशलए वे गा नहीं ं सकते हैं। गुरुदेव कहते थे, "गला बैठ गया है अथवा खराब है, तो भी गाइए। इससे आपको छ्रि नहीं ंशमलेगी।" अतिः प्रत्येक व्यक्ति को भगवन्नाम का गान करना आवश्यक था। ऐसा नहीं ंथा शक केवल एक या दो व्यक्ति गा रहे हों ंतथा अन्य अनुसरण कर रहे हों,ं मात्र सुन रहे हों।ं
सबको महामन्त्र का गान करना होता था।

यह मनुष्य के मन की एक बहुत शवशिष्ट प्रवृशत्त है शक कोई स्वथथ व्यक्ति जो अन्य अवसरों ं पर तेज आवाज में शचल्लाकर बात करने में समथथ है, भगवान्‍ के नाम का गायन करते समय उसका गला काम नहीं ंकरेगा। उसकी आवाज नहीं ंशनकलेगी। एक िब्द बोलने में आवाज लड़खड़ायेगी और उसे समझ नहीं ंआयेगा शक वह क्या कहे। अन्य समय पर उसका कायथ एवं क्तथथशत शकतने ही महत्त्वपूणथ हों,ं इस समय वह पूणथतया असफल हो जाता है। परन्तु गुरुदेव व्यक्तियों ंके इस संकोच एवं घबराहि को दूर कर देते थे।

हम सब वृत्व कला से अपररशचत थे। हम यह सोचकर काँप जाते थे शक हम तीन व्यक्तियों ंके सामने भी शकस प्रकार बोल पायेंगे ? परन्तु स्वामी शिवानन्द जी एक कठोर प्रशिक्षक थे। वे यह सुशनशश्चत करते थे शक हम व्याख्यान दें। मैं सावथजशनक व्याख्यान देने की कला से सवथा अनशभज्ञ था। मैं सभा के समि एक वाक्य बोलने में भी असमथथ था, और गुरुदेव यह बात जानते थे, इसशलए वे चाहते थे शक मेरी यह दुबथलता दूर हो। सत्संग के मध्य, सब लोगों ंके सामने वे अचानक ही मुझसे कहते, "जाइए तथा कुछ बोशलए।" मैं कहता था, "मैं बोल नहीं ंसकता हाँ।" तब वे कहते, "अच्छा, यही बोल दीशजए शक मैं बोल नहीं ंसकता हाँ। क्या आप इतना भी नहीं ं बोल सकते हैं? आप कह रहे हैं शक आप बोल नहीं ंसकते हैं। वहााँ जाइए तथा आसन पर बैठकर इतना कह दीशजए शक आप कुछ बोल नहीं ंसकते हैं।" हम शकसी प्रकार आसन पर बैठते तथा कुछ- न-कुछ बोल देते। "बहुत अच्छा ! बहुत अच्छा व्याख्यान !" गुरुदेव इस प्रकार कहते तथा पुरस्कार स्वरूप एक केला देते थे।

गुरुदेव एक व्यक्ति की प्रत्येक िमता, उसमें शछपी प्रत्येक सम्भावना को अत्यशधक प्रोत्साहन देते थे। यह उनकी श्रेष्ठता थी, उनकी गहन अन्तदृथशि थी तथा उनकी महानता थी। यशद एक संगीतकार आश्रम में आता, तो वे यह सुशनशश्चत करते थे शक उसकी प्रशतभा को पूणथ अशभव्यक्ति का अवसर प्राप्त हो। एक नृत्यकार आता तो वे उसे भी उतना ही प्रोत्साशहत करते थे। यशद कोई प्रोफेसर आश्रम आते तो गुरुदेव कहते, “प्रोफेसर साहब, आज केवल आप ही व्याख्यान देंगे, अन्य कोई नहीं।ं" शफर वे प्रोफेसर अनेक व्याख्यान देते थे। गुरुदेव छोिे-छोिे बालकों ंको भी शवशभन्न प्रकार की प्रस्तुशतयााँ देने हेतु प्रोत्साशहत करते थे।

श्री गुरुदेव की शविालहृदयता एवं करुणा वृत्ति भगवान्‍ की मशहमा एवं महानता का प्रत्यि प्रमाण थी। जैसे-जैसे समय व्यतीत होता गया, वे लोगों ंके अशधकाशधक शप्रय होते गये। उनके छोिे से ऑशफस में आयोशजत सत्संग को लोग 'शिवानन्द दरबार' कहते थे। भिवृन्द शिवानन्द दरबार की मशहमा का वणथन करते हुए सुन्दर भजन गाते थे। वे इस दरबार को भवसागर से पार करने का सवथश्रेष्ठ साधन मानते थे।

मुिहि दान उनके शविाल-हृदय की सहज अशभव्यक्ति थी। उस समय आश्रम की कुछ शनशश्चत संचालन-व्यवथथा नहीं ंथी। श्रीगुरुदेव स्वयं ही सब कुछ थे। यद्यशप एक व्यक्ति आश्रम-सशचव के रूप में कायथ कर रहा था जो अल्पतम संसाधनों ंसे शकसी प्रकार समूपूणथ आश्रम की व्यवथथा करने का प्रयास करता था। उन शदनों ंदो समय के भोजन की व्यवथथा करना भी अत्यशधक कशठन था; और उन्हीं ंशदनों ंश्री गुरुदेव की दानिीलता भी बढ़ती जा रही थी । वे एक सपेरे को ७५ रुपये दे देते थे। वह सपेरा स्वयं आश्चयथचशकत हो गया। उसे समझ नहीं ंआ रहा था शक उसके

हाथ में ये ७५ रुपये हैं अथवा वह अन्धा हो गया है। उसे कोई दस पैसे भी नहीं ंदेता था परन्तु गुरुदेव ने ७५ रुपये दे शदये। आस-पास खड़े लोग गुरुदेव के इस कायथ को समझ नहीं ंसकते थे।

श्री गुरुदेव का आशथथक-शसद्ान्त समि आधुशनक अथथशाक्तस्त्रयों ंकी समझ से परे था, यह एक प्रकार से उन अथथशाक्तस्त्रयों ंकी पराजय ही था। गुरुदेव उनकी गशणत, अंकगशणत नहीं ंजानते थे। एक शदन गुरुदेव ने अचानक घोर्णा कर दी शक वे कल के शलए कुछ भी धन िेर् नहीं ं रखेंगे। जो धन है, उसे उसी शदन खचथ कर शदया जायेगा, आने वाला कल अपनी व्यवथथा स्वयं करेगा। 'कल के शलए कुछ िेर् नहीं ंरखें'- ये शकसी कुिल व्यवथथापक अथवा अथथशास्त्री के ब्दि नहीं ंहो सकते हैं, ये िब्द एक सन्त के ही हो सकते हैं। इस बात को कोई स्वीकार नहीं ं कर सकता है शक हमें आने वाले कल के शलए कुछ व्यवथथा नहीं ंकरनी चाशहए। हम कोई भी शिक्षा-उपदेि स्वीकार कर सकते हैं, परन्तु इस उपदेि को स्वीकार नहीं ंकर सकते हैं क्योंशंक हमारे िरीर, हमारे मन एवं हृदय हमारी आवश्यकताओं ंकी पूशतथ में बाधा बनने वाले इस उपदेि-आदेि के शवरुद् शविोह करते हैं।

मैंने पूवथ में कहा था शक भगवदीय-पुरुर्, सन्तजन भगवदीय सत्ता से ओत-प्रोत होते हैं। 'कल के शलए कुछ िेर् नहीं ंरखें' - हम उनके इस उपदेि को स्वीकार नहीं ंकर सकते हैं, क्योंशंक हमें कल के शलए व्यवथथा करना (धन रखना) आवश्यक नहीं ंअशपतु अत्यावश्यक लगता है। इससे यह प्रमाशणत हो जाता है शक हम भगवद्-साक्षात्कार की प्राक्तप्त हेतु शकस सीमा तक योग्य हुए हैं। गुरुदेव हम सबको यह चेतावनी देना चाहते थे शक हम अपनी आवश्यकताओं ंकी पूशतथ के नाम पर कहीं ंसुख-सुशवधाओं ंमें िूब न जायें; यद्यशप हमारी आवश्यकताएँ नगण्य हैं।

मैं घिनाओं ंका कालिमानुसार वणथन नहीं ंकर रहा हाँ। मेरे मन में शजस िम में शवचार उठ रहे हैं, मैं उसी िम में कह रहा हाँ। एक बार राशत्र-सत्संग के बाद उन्ोंनें घोर्णास्वरूप कहा, "क्या कोई ब्रह्मलोक आना चाहेगा?" उन्ोंनें पुनिः कहा, "क्या कोई ब्रह्मलोक आना चाहता है?" हमें ऐसा प्रतीत हुआ शक उस समय कहीं ंढोल बजने की ध्वशन हुई। लोग कहते हैं शक यह ध्वशन वैसी ही थी जो भगवान् राम एवं भगवान् कृष्ण के इस धरा को छोड़ कर अपने लोक जाने के समय हुई थी। श्री गुरुदेव शजस ब्रह्मलोक की बात कर रहे थे, शजसके शलए सबको आमक्तन्त्रत कर रहे थे, उनका संकेत भगवद्- लोक-गमन की ओर था। वे हमें ले जाना चाहते थे, परन्तु कोई उनकी बात को समझ नहीं ंपाया।

श्री गुरुदेव की महासमाशध के बाद आश्रम की समूपूणथ संरचना में चमत्काररक पररवतथन हुए। मैं इन्ें चमत्काररक कहता हाँ क्योंशंक जब गुरुदेव ने देह-त्याग शकया, उस समय आश्रम पूरी तरह ऋणग्रि था। आप समझ सकते हैं शक ऋणग्रिता से अशधक बुरा कुछ और नहीं ंहो सकता है। अतिः उस समय आश्रम की दिा शवकि थी। परन्तु गुरुदेव की महासमाशध के १६ शदन बाद अथाथत् उनकी र्ोड़िी को हमने ऐसा भव्य उत्सव एवं शविाल भण्डारा आयोशजत शकया जो इससे पूवथ आश्रम में कभी आयोशजत नहीं ंहुआ था। इस आयोजन हेतु एक बड़ी धनराशि खचथ हुई। हमें वह धन कहाँ से प्राप्त हुआ ? आप भी आश्चयथ करेंगे शक जो लोग ऋण के भार से दबे थे, उन्ोंनें र्ोड़िी पर शबना शकसी कशठनाई के इतने भव्य एवं सुन्दर उत्सव का आयोजन शकस प्रकार शकया। यह कुछ उसी प्रकार का शदव्य स्पिथ था जो भगवान् श्री कृष्ण ने सुदामा की शनधथनता दूर करने हेतु अपने शदव्य कर-कमलों ंसे शकया था। उन्ोंनें ही हमें अप्रत्यि रूप से आिीवाथशदत शकया। आज हम सब जानते हैं शक श्री गुरुदेव के आश्रम में इतनी अशधक संख्या में व्यक्ति भोजन करते हैं शक हम गणना नहीं ंकर सकते हैं। शभ, अशतशथ, आगनुतुक तथा अन्य ऐसे व्यक्ति भी भोजन प्राप्त करते हैं शजन्ें हमने कभी देखा भी न हो।

श्री गुरुदेव ने स्वयं का समूपूणथ शवश्व में शवार कर शदया है। यद्यशप वे स्वयं भारत से बाहर नहीं ंगये, परन्तु आज कोई ऐसा देि नहीं ंहै जहाँ 'स्वामी शिवानन्द' के शवर्य में लोग नहीं ं

जानते हैं। वे भारत के कुछ भागों ़के अशतररि अन्यत्र कहीं ़नहीं ़गये। शजस कमरे में वे रहते थे, उसे कमरे की बजाय एक झोपड़ी कहा जा सकता है क्योंशंक उसमें कोई सुशवधा नहीं ़थी, यहााँ तक शक वायु के आवागमन की भी उशचत व्यवथथा नहीं ़थी। यह क़ुिीर आश्रम की सम्पशत्त भी नहीं ़था। वे जीवनपयथन्त उसमें ही रहे; उन्ोंनें आश्रम के सुन्दर भवनों ़में कभी शनवास नहीं ़शकया।

गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज हम सबके शलए तपस्या के मूशतथमन्त शवग्रह हैं। वे ीतिकाल के अशतररि समू्पूणथ वर्थ पयथन्त िरीर पर एक छोिा वस्त्र ही पहनते थे, उन्ोंनें स्वयं अत्यन्त अल्प संसाधन यिु सरल जीवन व्यतीत शकया; परन्तु वे हम सब पर आिीवाथद की वृशि कर रहे हैं शजससे हम समि सुख-सुशवधाओं ़का उपभोग कर रहे हैं। हम शकस प्रकार सुख भोग रहे हैं, हममें से प्रते्येक को इस पर गहनता से शचन्तन करना चाशहए।

सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज ने शवश्व के समि अपने सहज-सरल तरीके से शदव्य जीवन के उस आदिथ को प्रिुत शकया शजसके वे स्वयं साकार शवग्रह थे। अपने शवशिि स्वरूप में, वे प्राचीन औपशनर्शदक गुरु महशर्थ याज्ञवल्क्य अथवा शतब्बती गुरु मारपा की प्रशतकृ शत थे अथाथत् उनके जैसे ही थे। यह कहने का कारण है क्योंशंक उनका स्वभाव भी अबोधगम्य था। उनके जीवन को हम ताशकथ क शवकास की दृशि से नहीं ़ देख सकते हैं। हम उनके शकसी कायथ-व्यवहार से शकसी सुशनशश्चत शनणथय एवं शनष्कर्थ पर नहीं ़ पहुाँच सकते हैं। हमारे शलए उनका व्यवहार अप्रत्याशित

एवं कभी-कभी अबोधगम्य होता था; हम उनके व्यवहार का पूवाथनुमान नहीं ◌ंलगा सकते थे तथा न ही उसे समझ पाते थे।

–श्री स्वामी कृष्णानन्द